दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

प्रश्न पत्र- द्वितीय

. [मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, बहुसंस्कृतिवाद; अपराध एवं दंड: भ्रष्टाचार, व्यापक हिंसा, जाति संहार, प्राणदंड; विकास एवं सामाजिक उन्नति; लिंग भेद: स्त्रीभ्रूण हत्या, भूमि एवं संपत्ति अधिकार, सशक्तीकरण, जाति भेद: गांधी एवं अम्बेडकर]

DTVF/17–OPS-**P6**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Mukosh kumar Lunayat

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 06 - 17/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	5	9	0	5

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): Hindi

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

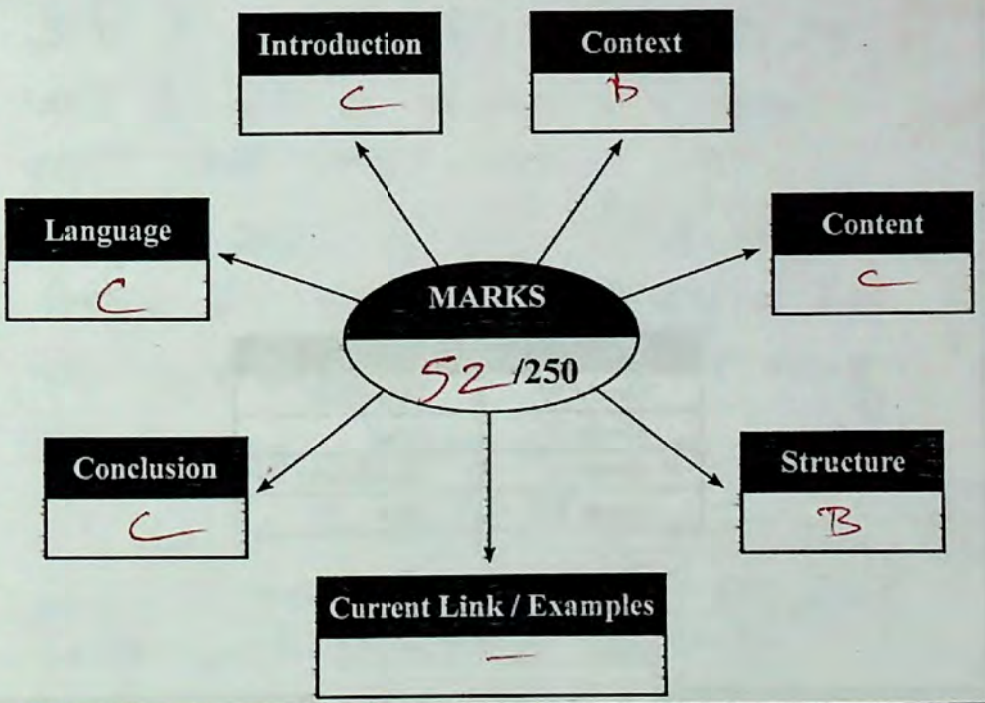

A3

व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- लेखनी में सुधार अपेक्षित है।
- दृष्टिकोण में विविधता लाएं।
- भूमिका और निष्कर्ष अवश्य लिखें।

Grade Card	
Grade 'A'	Very Good
Grade 'B'	Good
Grade 'C'	Satisfactory ✓
Grade 'D'	Poor

कृपया इस संख्या के न लिखें।
(Please d anything question this space

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - A/ SECTION - A

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: 10 × 5 = 50

Answer each of the following in about 150 words:

(a) मानव ही मानव का भविष्य है।

Man is the future of man.

प्रोटागोरस के "होमो मेंसुरा" के अनुसार "मनुष्य ही सभी का मापक है" । वस्तुतः मनुष्य ही मनुष्य का भविष्य है न कि कोई भौतिक पदार्थ पारलौकिक सत्ता।

उपरोक्त कथन की अभिव्यक्ति मानववाद में होती है क्योंकि मानव केन्द्रित अवधारणा है। मानववाद के अनुसार मनुष्य स्वयं में साध्य है। मानवीय ज्ञान, तर्कबुद्धि एवं विवेकशीलता ही वैज्ञानिक व सामाजिक क्रांति का आधार है। मनुष्य ही इस जगत के केन्द्र में है तथा अन्य सभी वस्तुएँ उसके साधन मात्र है।

स्पष्ट है कि मनुष्य ही भावी पीढ़ियों का निर्धारक है। यह मनुष्य के ही हाथ में है कि वह अपनी भावी पीढ़ियों को कैसा संसार सुपुर्द करना चाहता है। इस रूप में माना जाता है कि मनुष्य ने यह संसार अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त नहीं किया है बल्कि अपनी भावी पीढ़ियों से ऋण के

सार्त्र के कथन के संदर्भ में मानववाद की चर्चा करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूप में ~~[illegible]~~ उधार लिया है। अतः वह उसकी सततता व धारणीयता बनाने हेतु उत्तरदायी है।

मानव प्रबंध के निर्माण के क्रम में मानवता का भी निर्माण करता है।

1½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	–	0.5	.05	.25	–	.25	–
Grade	–	D	D	C	–	B	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(b) सकारात्मक एवं नकारात्मक धर्मनिरपेक्षता।

Positive and negative secularism.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धर्मनिरपेक्षता ~~सकारात्मक~~ से आशय अंतर-धार्मिक एवं अंत: धार्मिक-दोनों प्रकार के वर्चस्वों के विरोध से है।

नकारात्मक धर्मनिरपेक्षता:-

धर्मनिरपेक्षता का पश्चिमी मॉडल राज्य व धर्म के मध्य पारस्परिक निषेध के सिद्धांत पर आधारित है। यह नकारात्मक धर्मनिरपेक्षता का समर्थन करता है जिसके अनुसार

- राज्य धर्म के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा एवं धर्म राज्य के मामलों में अहस्तक्षेप का पालन करेगा।
- धर्म राज्य की नीतियों का विषय नहीं हो सकता है।
- यह राज्य समर्थित धार्मिक सुधारों पर रोक लगाता है।
- राज्य धार्मिक संस्थानों को किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं दे सकता
- यह मुख्यत: अंत: धार्मिक वर्चस्व पर केंद्रित
- अंतर-धार्मिक वर्चस्व व अल्पसंख्यकों की उपेक्षा

धर्मनिरपेक्षता को परिभाषित करते हुए उत्तर प्रारम्भ किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता

- यह राज्य को सैद्धांतिक दूरी बनाये रखने के साथ-साथ सैद्धांतिक हस्तक्षेप की अनुमति देता है।
- अन्तः धार्मिक वर्चस्व के साथ साथ अंतर-धार्मिक वर्चस्व पर भी विरोध ध्यान
- राज्य द्वारा धार्मिक समूहों के अधिकारों को मान्यता
- राज्य समर्थित धार्मिक सुधारों की गुंजाइश व अनुकूलता।

धर्मनिरपेक्षता के भारतीय मॉडल सकारात्मक व नकारात्मक दोनों को एक साथ लेकर वैज्ञानिकता व पश्चिम की तटस्थता यहाँ निष्पक्ष बन जाती है।

जीवन या अन्य पक्षों का नियमन धर्म आधारित नहीं बल्कि वैज्ञानिकता व तर्क के आधार पर किया जाता है (निर्देश दिया जाता है)

(4)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/2	1/2	1/2	1/4	–	1/2	–
Grade	A	B	B	C	–	B	–

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) बहुलवाद जैसे कि बहुसंस्कृतिवाद।

Pluralism viz a viz multi culturalism.

बहुलवाद	बहुसंस्कृतिवाद
1. बहुलवाद सभी समुदायों व संस्कृतियों के मध्य सौहार्द व शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का समर्थन करता है।	1. यह एक ऐसी अवधारणा है जो न केवल सांस्कृतिक विभेदों की पहचान अपितु उनके संरक्षण को भी राज्य की नीति का हिस्सा मानती है।
2. यह सार्वजनिक जीवन में समानता, स्वतंत्रता व अवसरों की उपलब्धता के संदर्भ में 'संस्कृति' की भूमिका को महत्व नहीं देता है।	2. ~~सांस्कृतिक~~ – सार्वजनिक जीवन सांस्कृतिक पहचान व संरक्षण में सामंजस्य का माध्यम है।
3. संस्कृति-तटस्थ अवधारणा	3. संस्कृति व सांस्कृतिक पहचान ही सभी अधिकारों का केन्द्र। – सांस्कृतिक न्याय, अस्मिता की पहचान के आधार पर राजनीति व सांस्कृतिक नागरिकता का समर्थन
4. टॉप-डाउन इंटीग्रेशन	4. डाउन-टू-टॉप इंटीग्रेशन अर्थात् प्रत्येक स्तर पर सांस्कृतिक विभेद की पहचान व संरक्षण का समर्थन
5. विविधता में एकता का समर्थन	5. एकता में विविधता का समर्थन

बहुलवाद में किसी संस्कृति का प्रभाव नहीं होता, समानता

बहुसंस्कृतिवाद में पहचान पर बल दिया जाता है।

(2)

भारतीय संदर्भ में बहुलवाद, बहुसंस्कृतिवाद की तुलना में ज्यादा प्रासंगिक है क्योंकि यह सभी विविधताओं के सम्मान के साथ-साथ एकता व अखंडता को भी सुनिश्चित करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(d) सामाजिक एकता सिद्धांत।
Social solidarity theory.

दंड के औचित्य के संदर्भ में दुर्खीम का सामाजिक एकता सिद्धांत आचारशास्त्रीय, प्रतीकात्मक व परिणाम निरपेक्ष सिद्धांत है।
इसके अनुसार अपराधी को उसके अपराध के अनुपात में दंड देने का उद्देश्य न तो उसे अपराध करने से रोकना व समाज में डेटरेंस उत्पन्न करना है एवं न ही उसके चरित्र में सुधार करना है बल्कि दंड का उद्देश्य समाज में सामाजिक एकता को बनाए रखना है।
दुर्खीम के अनुसार अपराध चूँकि समाज में स्थापित मूल्यों को चुनौती देता है अतः इन सामाजिक मूल्यों को सुरक्षित कर समाज में एकजुटता बनाए रखने हेतु अपराधी को अपराध के अनुपात में दंड देना आवश्यक है।
अपराधी को दिया गया दंड वस्तुतः इसी सामाजिक एकता के संरक्षण की औपचारिक अभिव्यक्ति मात्र है। दुर्खीम इसी

दुर्खीम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

आधारपर जघन्य अपराध हेतु मृत्यु दंड का समर्थन करते थे।

कमियाँ

1 – यह अपराध के बढ़ते दंड के समुचित प्रभाव को उत्पन्न करने में असमर्थ थे।

ii. पुनः यह सिद्धांत अपराध की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों जो अपराध हेतु प्रजनन भूमि का कार्य करती है, की अवहेलना करता है।

दुर्खीम के अनुसार दण्ड सामाजिक मूल्यों का पुनः निर्धारण है। दण्ड स्वयं साध्य है।

(1)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	—	1/2	1/2	-	—	—	—
Grade	-	P	P	-	—	—	—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) व्यक्तिगत ही राजनीतिक है।

Personal is political.

वर्तमान (नारीवादी) आंदोलन का यह आधारस्वरूप है।

नारीवादियों के अनुसार व्यक्ति के जीवन से संबंधित व्यक्तिगत धारणायें यथा परिवार, विवाह, रिप्रोडक्टिव संबंध, मित्रता आदि समान रूप से राजनीतिक विषय है एवं इन पर राजनीतिक नीतियों व नियमों द्वारा ध्यान दिया जाना चाहिए।

पारंपरिक रूप से ये ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन का मसला मानते हुए राजनीति का विषय नहीं माना गया है। राजनीति द्वारा इनकी उपेक्षा से अनिवार्यतः स्त्रियों के शोषण, हिंसा, लैंगिक विभेद को स्थायी बनाया था। इसी अवधारणा से पुरुषों की परिवार एवं संस्थाओं पर आधिपत्य स्थापित कर महिलाओं को सभी प्रकार से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इन पर निर्भर बना दिया है।
अतः इन व्यक्तिगत मुद्दों को राजनीतिक
विमर्श व विवाद का विषय बनाया जाना
अपरिहार्य है तभी समाज में नैतिक
विभेद की समाप्ति कर नैतिक समानता
की स्थापना की जा सकती है।

3

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	½	1½	1	–	–	1/4	–
Grade	B	B	C	–	–	B	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) क्या दंड के 'प्रतिकारात्मक' और 'निवारक' सिद्धांत परस्पर पूरक हैं ? 15

Is 'Retributive' and 'Deterrent' theory of punishment complementary? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दंड के औचित्य के संदर्भ में प्रतिकारात्मक सिद्धांत एक आचारशास्त्रीय व परिणाम निरपेक्ष सिद्धांत है वहीं निवारक सिद्धांत उपयोगितावादी व परिणामवादी सिद्धांत है।

वस्तुतः जहाँ प्रतिकारात्मक सिद्धांत अपराध के समान अनुपात में दंड का समर्थन करता है वहीं निवारक सिद्धांत का उद्देश्य चूंकि व्यक्तिगत निवारक के साथ-साथ समाज के अन्य लोगों को अपराध से रोकने हेतु अपराध की तुलना में अधिक दंड का भी समर्थन करता है।

वस्तुतः दोनों ही सिद्धांत दंड के समुचित प्रभाव को उत्पन्न करने में असफल हैं। क्योंकि अपराधी द्वारा अपराध करने के जिम्मेदार सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों की अवहेलना करते हैं।

दोनों सिद्धांत पूरकता कैसे?

चूंकि अपराध के दंड का उद्देश्य अपराधी को दंड देना, अपराधी में सुधार करना व उसे अपराध करने से रोकना भी है, ऐसे में अपराध का सुधारात्मक सिद्धांत उपरोक्त दोनों से बेहतर है। क्योंकि यह अपराध हेतु जिम्मेदार सामाजिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

- आर्थिक मारकों को संबोधित करने का प्रयास करता है।

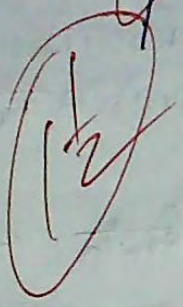

1½

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड – B / SECTION – B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: $10 \times 5 = 50$
Answer each of the following in about 150 words:

(a) एक व्यक्ति को मारो और आप हत्यारे हैं, लाखों व्यक्तियों को मारो और आप विजेता हैं।
Kill one man and you are a murderer, kill millions of people and you are a conqueror.

इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जब-जब किसी को विजेता की संज्ञा दी गई है तब-तब उसने ऐसी विजय लाखों व्यक्तियों को मार कर (यथा हिटलर के नेतृत्व में यहूदियों द्वारा नाजियों की ~~[illegible]~~ हत्या, तुर्की द्वारा 1915-20 में आर्मेनियाई लोगों का संहार) ही पायी गयी है।

- Genocide
सामान्य परिचय
3 अंक प्रासंगिक

वस्तुतः वर्तमान लोकतांत्रिक युग में उपरोक्त विचार स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसे अब 'विजेता' की संज्ञा न देकर 'जनसंहार' को घृणित अपराध माना जाता है।

लाखों व्यक्तियों की एक साथ हत्या हेतु 'जनसंहार' शब्द युक्तियुक्त है क्योंकि

I. यह एक घृणित अपराध को सूचित करता है।
II. पुनः यह दर्शाता है कि 'जनसंहार' अधन्य है, जिसे वर्तमान में स्वीकार नहीं किया जा सकता।
III. निषेधात्मक अर्थ को अभिव्यक्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ऐसे कृत्यों हेतु पलायन को आभासित संकट, आर्थिक संकट, सामाजिक व सांस्कृतिक संकट, प्रजातीय व नृजातीय श्रेष्ठता की भावना, दूसरे समुदाय को अपनी प्रगति में बाधक मानना आदि कारक प्रमुख है।

किसी समूह विशेष के विरुद्ध उपरोक्त कारणों की वजह से ही वृहद स्तर पर हत्याओं को 'विभीषिका' की संज्ञा दी जाती रही थी।

'जनसंहार' के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र का कन्वेंशन इसे रोकने हेतु वैश्विक प्रयासों की मंशा को समर्पित करता है एवं इसकी व्यापक स्पष्ट परिभाषा को निर्मित करते पहचान हेतु डेटा ताकि इसे रोका जा सके व पीड़ित समूहों को न्याय प्रदान किया जा सके।

संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन का महत्वपूर्ण है मुख्य-मुख्य प्रावधानों का उल्लेख कीजिए।

2½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	–	1	1	1/4	–	1/4	–
Grade	D	C	C	C	–	B	–

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) अम्बेडकर जाति व्यवस्था का उन्मूलन किस प्रकार चाहते हैं?
How does Ambedkar want to eradicate caste system?

गाँधीजी के विपरीत अंबेडकर जाति व्यवस्था को वर्ण-व्यवस्था की विकृति का परिणाम न मानकर इसे इसकी स्वाभाविक व अनिवार्य परिणाम मानते हैं।

जहाँ गाँधीजी ने जाति-व्यवस्था के उन्मूलन हेतु वर्ण-व्यवस्था की मूल प्रकृति को बचाते हुए सर्वोदय, दरिद्रनारायण के कल्याण एवं 'हृदय परिवर्तन' के माध्यम से प्रयासों से महत्ता दी है वहीं अंबेडकर —

क) जाति व्यवस्था के उन्मूलन हेतु वर्ण-व्यवस्था के उन्मूलन को अनिवार्य मानते है।

ख) जाति व्यवस्था के उन्मूलन हेतु सामाजिक ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन को आवश्यक मानते है।

ग) गाँधीजी के विपरीत अंबेडकर इस हेतु संघर्ष को अपनाने की

• हिन्दू धर्म का प्रमाणित ग्रंथ
• पुरोहितों की सरकारी नियुक्ति

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

की बात करते है।

ख) अंबेडकर के अनुसार चूंकि सभी भारतीय एक ही नस्ल के है, अतः वर्ण व्यवस्था जैसी अपमानित, अन्यायपूर्ण प्रणाली जिसने हिंदु समाज को विखंडित व विकृत व बंद समाज बना दिया है, की समाप्ति आवश्यक है।

3. अंबेडकर जाति व वर्ण व्यवस्था को व्यक्ति की क्रियात्मक क्षमता की अवहेलना के आर्थिक दृष्टिकोण से अनुत्पादक सिद्ध कर इसके उन्मूलन का समर्थन करते थे।

स्पष्ट है कि गांधीजी व अंबेडकर दोनों ही जाति व्यवस्था के उन्मूलन की बात करते है परंतु गांधीजी जहां समाज में संरचनात्मक सुधार वहीं अंबेडकर उच्चागत सुधारों को अपनाने का समर्थन करते थे।

कारण

• अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए कानूनी उपाय सुझाए

3

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/4	1½	1	–	–	1/4	-
Grade	B	B	C	D	–	B	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'पितृसत्ता' लैंगिक शोषण के साथ-साथ पीढ़ीगत शोषण को भी उत्पन्न करती है।

'Patriarchy' generates gender exploitation as well as generation exploitation.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पितृसत्ता' से आशय समाज की उस विशेषता से है जिसमें ~~[illegible]~~ जीवन के सभी क्षेत्रों (व्यक्ति, परिवार, समाज) एवं सार्वजनिक जीवन में महिलाओं व बालिकाओं की तुलना में पुरुषों व बालकों को प्राथमिकता, वरीयता दी जाती है।

यह समाज की ऐसी 'अभिवृत्ति' है जो
- महिलाओं के विरुद्ध अन्याय, शोषण व हिंसा का कारण बनती है।
- लैंगिक-विभेद व असमानता को बढ़ावा देकर स्थायी बना देती है।
- लैंगिक समानता व लैंगिक समता की स्थापना में बाधा उत्पन्न कर महिलाओं के सशक्तिकरण को रोकती है।

'पितृसत्ता' चूंकि एक सामाजिक अभिवृत्ति है अतः अपेक्षाकृत स्थायी प्रवृत्ति है फलतः यह न केवल वर्तमान में लैंगिक शोषण को बढ़ावा देती है अपितु चूंकि परिवार व समाज, संस्कृति बच्चों के मूल्यों व अभिवृत्तियों के निर्धारक के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है अतः

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"पितृसत्तात्मक सोच" इस नवीन पीढ़ी में भी स्थापित्व ग्रहण करने लग जाती है एवं समाज में इसे सबलता के रूप में मान्यता मिल जाती है।

अतः 'पितृसत्तात्मक सोच व व्यवहार में महिला सशक्तिकरण, कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं को सिद्धांत व व्यवहार में समान भूमि व संपत्ति अधिकार, महिलाओं हेतु समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व जैसे आदर्शों को वास्तविक बनाने एवं राष्ट्र के विकास एवं राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में उन्हें बराबर के साझी बनाने हेतु "पितृसत्ता" की समाप्ति अत्यंत आवश्यक है।

इस हेतु सामाजिक अभिवृत्ति में परिवर्तन सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपाय है।

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/2	1	1	1/4	–	1/4	–
Grade	A	C	C	C	–	B	–

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(d) 'वर्ण व्यवस्था' नैतिक है जबकि भेदभावपूर्ण 'जाति व्यवस्था' अनैतिक है।

'Varna System' is moral while discriminatory 'Caste System' is immoral.

वर्ण व्यवस्था समाज में श्रेणीकरण एवं स्तरीकरण की वह व्यवस्था है जिसमें जन्म के आधार पर व्यवसाय विभाजन किया जाता है।
वहीं 'जाति-व्यवस्था' वर्ण व्यवस्था की विकृति का परिणाम है। यह समाज में जाति-भेद का कारण बनती है।

महात्मा गाँधीजी ने वर्ण व्यवस्था को नैतिक माना है क्योंकि

- उनके मतानुसार वर्ण व्यवस्था समाज में व्यवसाय का विभाजन कर व्यवस्थित एवं नैतिक समाज की स्थापना करती है।
- गाँधीजी के अनुसार यदि प्रत्येक वर्ण में व्यक्ति अपने कर्तव्य (व्यवसाय) का पालन करे तो परस्पर सामाजिक अंतर्निर्भरता का भाव उत्पन्न होता है जिससे सामाजिक सौहार्द की स्थापना होती है।
- पुनः इसे अपनाकर व्यवसाय का विशेषीकरण व परिष्करण कर वर्तमान समाज में लोगों के मध्य हो रहे रोजगार हेतु संघर्ष व प्रतिस्पर्धा से बचा जा सकता है तथा इसकी वजह से होने वाले द्वेष, घृणा व हिंसा से छुटकारा पाया जा सकता है।
- पुनः इसका पालन कर व्यक्ति अपने ~~सामाजिक~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आध्यात्मिक व नैतिक उन्नति हेतु व्यापक समय निकाल सकता है।

गाँधीजी वर्ण व्यवस्था की विकृति से उत्पन्न जाति-विभेद व जाति-व्यवस्था के विरोधी थे।

उनके मतानुसार यह अस्पृश्यता को उत्पन्न करती है जो मानवीय समुदाय पर कलंक है।

- जाति व्यवस्था व जाति विभेद सर्वोदय समाज, सर्वधर्मसमभाव व वसुधैव कुटुम्बकम् विरुद्ध है।

- अस्पृश्यता के सबसे विकृत व खतरनाक रूप जाति-भेद के उत्पत्ति का कारण बनती है अतः जाति व्यवस्था अनैतिक है।

ज्ञातव्य है कि अंबेडकर, गाँधी के विरुद्ध जाति-व्यवस्था को वर्ण व्यवस्था की विकृति का परिणाम न मानकर स्वाभाविक व अनिवार्य परिणाम मानते हैं फलतः जाति-भेद के उन्मूलन हेतु 'जाति-व्यवस्था' के साथ साथ 'वर्ण-व्यवस्था' के उन्मूलन की बात करते हैं।

वर्ण व्यवस्था आध्यात्मिक नैतिक उत्थान का साधन जबकि भेद अनैतिक

4½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/2	2	1.5	1/4	-	1/4	-
Grade	A	A	B	C	-	B	-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(e) मानव विकास।
Human development.

मानव विकास से आशय विकास की समावेशी एवं धारणीय अवधारणा को अपनाकर ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने से है जहाँ सभी लोग बिना बाह्य कारकों से प्रभावित हुए अपनी क्षमताओं को साकारित कर सकें।

यह विकास के परंपरागत आर्थिक मॉडल से बाहर जाकर 'क्षमता-निर्माण' एवं वितरणात्मक न्याय को विकास का अनिवार्य तत्व मानता है।

मानव विकास मनुष्य के सर्वसमावेशी विकास का समर्थक है जिसके तहत मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं, मानवीय कल्याण के आधारों तथा अवसरों की समानता व उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाता है।

मानव विकास की अवधारणा के जनक मुख्यतः महबूब उल हक एवं अमर्त्य सेन हैं जिन्होंने 1990 के दशक में मानव विकास सूचकांक के माध्यम से विभिन्न देशों के मध्य मानव

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास को मापने हेतु इंडेक्स तैयार किया। इसके घटक है:-

(i) प्रति व्यक्ति आय (PPP समायोजित)

(ii) शिक्षा के अवसर
(क) स्कूलिंग के अपेक्षित औसत वर्ष
(ख) स्कूलिंग के वास्तविक औसत वर्ष

(iii) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा

मानव विकास रिपोर्ट 2018 में भारत का .682 अंकों के साथ विश्व में 130 वाँ स्थान है। ध्यातव्य है कि मानव विकास की अवधारणा लैंगिक -असमानता व सामान्य असमानता को भी शामिल करती है।
लैंगिक असमानता के मामले में भारत .525 अंकों के साथ 125वें स्थान पर है।

इस प्रकार मानव विकास की अवधारणा शिक्षा, स्वास्थ्य व आय तीनों को शामिल करती है। ध्यातव्य है कि हाल ही के वर्षों में इसकी कमियों को पूरा करने हेतु सामाजिक प्रगति सूचकांक एक विकल्प के रूप में उभर रहा है क्योंकि सामाजिक प्रगति पर्यावरणीय विकास के पहलू को भी शामिल करती है।

विकास की अवधारणा निरंतर परिवर्तनशील है।

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/2	2	1½	1/4	–	1/4	-
Grade	A	A	B	C	–	B	

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (a) अम्बेडकर के लिये समानता का अर्थ वर्णों के मध्य समानता नहीं बल्कि सभी के लिये समान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अवसर था। टिप्पणी कीजिये। 20

For Ambedker equality does not mean to equal status of the varna, but equal social political and economic opportunity for all. Comment. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारतीय संविधान में उनके योगदान हेतु "भारतीय संविधान के जनक" की संज्ञा दी जाती है। भारतीय संविधान जाति, वर्ण, जन्म, लिंग आदि आधारों पर विभेद का विरोध कर सभी के लिये समान सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अवसरों का समर्थन करता है।

वस्तुतः जहाँ गाँधीजी तत्वमीमांसीय एकत्ववाद (Metaphysical monism) के आधार पर सभी वर्णों के सदस्यों में ईश्वरीय अंश को मानकर सभी वर्णों के मध्य समानता स्थापित करते हैं एवं वर्ण-व्यवस्था को नैतिक मानते हैं।
वहीं अंबेडकर वर्ण-व्यवस्था व जाति-विभेद के संदर्भ में गाँधीजी के विचारों के कटु विरोधी हैं। गाँधीजी के विरुद्ध अंबेडकर ने जाति व्यवस्था को वर्ण-व्यवस्था की स्वाभाविक परिणाम माना है। उनके मतानुसार बिना वर्ण-व्यवस्था को हटाये जाति-व्यवस्था व जाति-विभेद की समाप्ति

अनावश्यक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं की जा सकती। अतः अंबेडकर समाज व राजनीतिक व्यवस्था में स्वतंत्रता, समानता न्याय व बंधुत्व के आदर्शों की स्थापना हेतु वर्णों की समानता का न केवल विरोध करते है अपितु वर्ण-व्यवस्था के उन्मूलन की बात करते है क्योंकि

- उनके मतानुसार वर्ण व्यवस्था व इसका अनिवार्य सह उत्पाद जाति भेद ने हिंदु समाज को विखंडित व विकृत कर बंद समाज बना दिया है। इससे राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में भी बाधा पहुँचती है।
- वर्ण व्यवस्था व्यक्ति की क्रियात्मक क्षमता की अवहेलना कर उसके व्यवसाय चुनने व जीवन जीने की स्वतंत्रता को सीमित करती है।
- यह आर्थिक आधार पर भी अनुत्पादक है।
- अंबेडकर के अनुसार व्यवसाय विशेषीकरण को अपनाकर व्यवस्थित व वैज्ञानिक समाज की रचना करने से संबंधित गाँधीजी का तर्क अस्वीकार्य है क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता, जीवन जीने के अधिकार, अवसरों की उपलब्धता व समानता के विरुद्ध है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अतः अंबेडकर उपरोक्त आधारों पर समानता
के वर्णों के मध्य समानता न
मानकर प्रत्येक व्यक्ति हेतु समान
सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक अवसरों
की समानता मानते है।

उनके अनुसार ऐसा अनिवार्य वर्ण व्यवस्था
की समाप्ति के बाद ही किया जा सकता
है क्योंकि वर्ण व्यवस्था ही दलितों की
असमानपूर्ण, अमानवीय स्थिति का कारण
है इसकी उपस्थिति इसे स्थायी बना
देती है। वर्ण व्यवस्था समाज के एक
वर्ग को लम्बा के लिए सामाजिक, राजनीतिक
व आर्थिक अवसरों से परे कर
अव्यवस्थित, विकृत, विखंडित व असभ्य सामाजिक
व्यवस्था को जन्म देती है।

निष्कर्षतः सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक अवसरों की
समानता की वास्तव में स्थापना हेतु जाति विभेद, जाति
व्यवस्था का उन्मूलन आवश्यक है क्योंकि इसने भारतीय लोकतांत्रिक
व्यवस्था को भी प्रभावित किया है।

7

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/4	3	3	1/4	–	1/2	–
Grade	B	B	B	C	–	A	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) यदि 'उपयोगितावादी सिद्धांत' अपराध की गंभीरता के अनुरूप दंड की मात्रा को संबद्ध करने में असफल रहता है, तो 'प्रतीकारात्मक सिद्धांत' दंड के पर्याप्त प्रभाव को सुनिश्चित करने में असफल रहता है। टिप्पणी कीजिये। 15

If 'Utilitarian Theory' fails to relate the amount of punishment with the seriousness of crime, 'Retributive Theory' fails to ensure for the proper effect of punishment. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान संदर्भ में अपराध मूलत: एक कानूनी अवधारणा है जो किसी कानून या नियम के उल्लंघन से संबंधित है। अपराध को रोकने हेतु दंड की व्यवस्था की जाती है।
दंड की औचित्यता के संदर्भ में 2 सिद्धांत प्रमुख है। (क) आचारशास्त्रीय सिद्धांत (ख) उपयोगितावादी सिद्धांत

प्रतीकारात्मक सिद्धांत का संबंध दंड के औचित्य के आचारशास्त्रीय सिद्धांत से है। दंड का यह सिद्धांत दंड को अपने आप में साध्य मानता है, तथा इसके पीछे किसी प्रयोजन को नहीं मानता है।

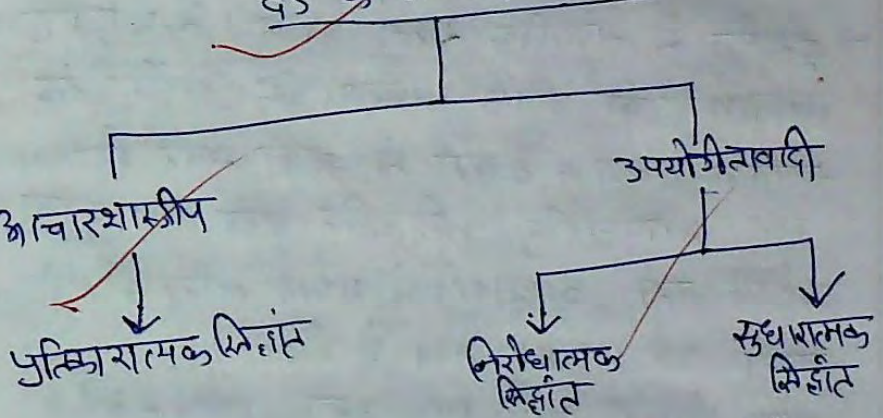

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस सिद्धांत का उद्देश्य नियम की श्रेष्ठता को बनाए रखना व अपराधी को अपराध के अनुपात में दंड सुनिश्चित करना है।

→ प्रतिकारात्मक सिद्धांत अपराधी से उसी के समान व अनुपात में उसे वापस लेने का समर्थन करता है जो उसने समाज से छीना है (जैसे को तैसा)।

→ यह सिद्धांत चूँकि अपराध की परिस्थितियों व प्रयोजन पर ध्यान नहीं देता अतः यह अपराध का प्रयोजनहीन, आचारशास्त्रीय व परिणाम निरपेक्ष सिद्धांत है।

→ दूर्खीम के सामाजिक एकता सिद्धांत के अनुसार अपराधी को उसके अपराध के बदले दंड सामाजिक एकता व मूल्यों को बनाए रखने की एक औपचारिक अभिव्यक्ति मात्र है। इसका उद्देश्य न तो अपराधी में सुधार लाना है और न ही उसे अपराध करने से रोकना।

कांट, हीगल आदि इसके प्रमुख समर्थक हैं।

कमियाँ

1) यह सिद्धांत दंड के औचित्य, उद्देश्य व प्रभाव को स्पष्टतया प्रकट करने में असफल है।

2) यह अपराधी द्वारा अपराध करने की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

में नहीं रखता है।

iii) आँख के बदले आँख वाला यह सिद्धांत सम्पूर्ण विश्व को अंधा बना देगा।

उपयोगितावादी सिद्धांत

उपयोगितावादी सिद्धांत दंड को अपने आप में साध्य न मानकर समाज में अधिकतम लोगों हेतु अधिकतम सुख की स्थापना का साधन मात्र मानता है। इसके 2 प्रकार है:-

क) डेटेरेंस सिद्धांत - इसके अनुसार दंड का उद्देश्य व्यक्ति को भविष्य में अपराध करने से रोकने के साथ साथ समाज के अन्य लोगों में अपराध न करने हेतु भय उत्पन्न करना है। इसी कारण यह सिद्धांत अपराध की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक दंड का समर्थन करता है।

ख) सुधारात्मक सिद्धांत — इसके अनुसार अपराध का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र में सुधार करना है। अपराधी के बदले दिये गये दंड से उसे अपनी गलती का एहसास होता है। यह सिद्धांत अपराध की तुलना में कम दंड का समर्थन करता है।

दोनों सिद्धांतों के लाभ व हानि भी लिखिए

(सीमाएं)
I. डेटेरेंस सिद्धांत व्यक्ति को साध्य के बजाय साधन मात्र के रूप में प्रयोग करता है।
II. सुधारात्मक सिद्धांत केवल बालकों व प्रथमतः अपराध करने वालों पर ही प्रभावी रूप से लागू होता है, पेशेवर अपराधी पर नहीं।

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि दोनों ही सिद्धांतों में अपनी अपनी कमियाँ है अतः दोनों का मिश्रित रूप दंड का बेहतर सिद्धांत होगा।

5

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/2	2	2	1/4	—	1/4	
Grade	B	B	B	C	—	B	

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'बहुसंस्कृतिवाद' पारंपरिक उदारवादी सिद्धांत को चुनौती देता है और एक कदम आगे बढ़कर सभी के लिये समान न्याय सुनिश्चित करता है। स्पष्ट कीजिये। 15

'Multi-culturalism' challenges traditional liberal theory and goes a step further to ensure justice for all. Elucidate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारंपरिक उदारवादी सिद्धांत सभी व्यक्तियों को केवल व्यक्ति होने के नाते समानता, स्वतंत्रता व न्याय के अधिकारों व अवसरों की स्वतंत्रता का समर्थन करता है, यह अधिकारों, कर्तव्यों एवं अवसरों की उपलब्धता के निर्धारण में समूह या संस्कृति को महत्व नहीं देता है, इस संदर्भ में यह एक 'संस्कृति-तटस्थ' अवधारणा है।

इसकी और बहुसंस्कृतिवाद से आशय न केवल सांस्कृतिक पहचानों को मान्यता देने से है बल्कि सांस्कृतिक समूहों हेतु विशेष व विशिष्ट अधिकारों व उनके संरक्षण हेतु प्रयासों की माँग करता है।

पारंपरिक उदारवादी सिद्धांत से यह निम्न लिखित रूप में भिन्न है:-

क) समानता

जहाँ पारंपरिक उदारवादी सिद्धांत के अनुसार समानता से आशय जन्म, लिंग, निवास, वर्ग, जाति आदि के आधार पर विभेद की समाप्ति एवं सभी हेतु अवसरों की समानता से है।

इसकी ओर बहुसंस्कृतिवाद के अनुसार समानता से आशय सांस्कृतिक विभेदों की पहचान व उनके संरक्षण से है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ख) न्याय
न्याय के परपरांगत "प्रक्रियात्मक सिद्धांत" के विपरीत बहुसंस्कृतिवाद 'सांस्कृतिक-न्याय' को महत्वपूर्ण मानता है।

ग) नागरिकता
जहाँ परपरांगत उदारवाद केवल राष्ट्रीय नागरिकता का समर्थक है वहीं बहुसंस्कृतिवाद राष्ट्रीय नागरिकता के समकक्ष ही सांस्कृतिक नागरिकता को महत्वपूर्ण मानता है।

सभी के लिए समान न्याय कैसे?

- बहुसंस्कृतिवाद के अनुसार यदि राज्य सांस्कृतिक पहचानों को मान्यता देता है तो ऐसे समुदायों में राष्ट्र-भावना की उत्पत्ति होती है।
- यह लोकतांत्रिक व्यवस्था में अल्पसंख्यकों की उपस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करता है।
- यह प्रवसन के मुद्दे को संबोधित करता है।
- इसको मान्यता देकर अलगाववाद को उत्पन्न होने से रोका जा सकता है व एकता व अखंडता सुनिश्चित कीया सकती है।
- इसके अभाव की पृष्ठभूमि में वर्तमान रोहिंग्या, यजदी समुदाय की समस्याओं को समझा जा सकता है।

उदारवाद की कमियाँ भी बताते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बहुसंस्कृतिवाद
समान न्याय का मार्ग में साधक न होकर बाधक है :-

i) यह राज्य के लिए सांस्कृतिक समुदाय विशेष की कुप्रथाओं, अंधविश्वासी मान्यताओं में सुधार को असंभव बना देता है।

ii) समान नागरिक संहिता की स्थापना में बाधक

iii) यह कई बार इन समुदायों के सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन का कारण बनता
उदाहरणतः इनके द्वारा अपनाई परंपरागत शिक्षा प्रणाली रोजगारपरक नहीं होती।

iv) निष्पक्ष न्याय में बाधक
— पर्सनल लॉ कानूनों के आधार पर शोषण को बढ़ावा – उदाहरणतः महिलाओं के भूमि व संपत्ति अधिकार

v) लैंगिक-असमानता व विभेद को स्थायी बना लेता है।

प्रासंगिकता
— यह प्रवसन के मुद्दे को संबोधित करता है।
— समाज में सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व जैसे मूल्यों का विकास करता है।

बहुसंस्कृतिवाद संतुलित विश्लेषण की मांग करता है

(8)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/2	1/2	3/4	1/2	–	1/2	–
Grade	B	C	C	C	–	B	–

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) 'लिंग असमानता' का कारण पूरी तरह जैविक है। क्या आप सहमत हैं? 15

The Cause of 'Gender Discrimination' is entirely biological. Do you agree? 15

"लिंग असमानता" का कारण पूर्णतया जैविक मानने को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। वास्तव में स्थिति इसके ठीक विपरीत है। जैविक अंतर 'सेक्स'(sex) संबंधी असमानताओं का कारण हो सकता है 'जेंडर' संबंधी असमानताओं का नहीं।

प्रारम्भ में ही निष्कर्ष न दें

रूसो के अनुसार असमानताएँ वस्तुतः 2 प्रकार की होती है (क) प्राकृतिक - इसे जैविक कारकों के आधार पर माना जा सकता है, इसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता है एवं नहीं वांछनीय है।

(ख) कृत्रिम :- यह सामाजिक- आर्थिक कारकों द्वारा निर्मित असमानता है। इसमें परिवर्तन न केवल संभव है अपितु वांछनीय एवं स्वीकार्य है। लिंग-असमानता भी इसी प्रकार की असमानता है।

'लैंगिक-असमानता' से आशय निजी जीवन व सार्वजनिक जीवन में महिलाओं व बालिकाओं के ऊपर पुरुषों व बालकों को वरीयता देना है।

'लैंगिक-असमानता' की उत्पत्ति में अनेक कारक जिम्मेदार हैं:-

क) 'पितृसत्ता' - यह ऐसी अभिवृत्ति है जहाँ महिलाओं व बालिकाओं को पुरुषों व बालकों की तुलना में कमजोर व हर दृष्टिकोण से उन पर निर्भर माना जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ख) धर्म – सभी परंपरागत धर्म व परम्परा ने महिलाओं की तुलना में पुरुषों की ओर एकतरफा झुके हुए हैं।

ग) वृहत समाज – अभी समाज में व्यापक रूप से महिलाओं की स्वतंत्रता की स्वीकार्यता का अभाव है।

लिंग असमानता जैविक क्यों मानें

घ) राजनीतिक व्यवस्था
- महिलाओं का निम्न प्रतिनिधित्व [उदाहरणत: केवल 543 में 61 महिला सांसद]
- नीति-निर्माण में भागीदारी का अभाव
- महिला समर्थक सुधारों हेतु राजनीतिक प्रतिबद्धता का अभाव

ङ) भेदभावपूर्ण आर्थिक व्यवस्था व गरीबी हटाने में राज्य की असफलता।

च) न्यायपालिका में अत्यंत अल्प प्रतिनिधित्व
- उदाहरणत: भारत के सर्वोच्च न्यायालय में प्रथम महिला जज की नियुक्ति में 39 वर्ष लगे।
- पुन: अगस्त 2017 तक 1950 से सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्त कुल 229 जजों में केवल 6 महिला जज हैं।

स्पष्ट है कि लिंग-असमानता जैविक कारकों के बजाय मुख्यत: पितृसत्तात्मक समाज, धर्म, राजनीतिक व आर्थिक-आर्थिक भेदभाव का समन्वित परिणाम है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चूँकि यह एक कृत्रिम विभाजन व विभेद है अतः इसकी समाप्ति न केवल आवश्यक है अपितु मानवीय नैतिक आधार पर भी वांछनीय है।

लिंग असमानता 'का' क्यों नहीं मान'

2½

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	–	1	1	½	—	½	–
Grade	D	D	D	C	–	B	—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'सामाजिक प्रगति' से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न आयामों पर चर्चा कीजिये। 15

What do you understand by 'Social Progress'? Discuss its different dimensions. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सामाजिक प्रगति की अवधारणा आर्थिक लाभों को सामाजिक व पर्यावरणीय सफलता में परिवर्तित करने पर केंद्रित है।

सामाजिक प्रगति से आशय ऐसी परिस्थितियों के निर्माण से है जहाँ

क) समाज के सभी सदस्यों की मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति सुलभ हो।

ख) यह ऐसे बिल्डिंग ब्लॉक्स के निर्माण पर केंद्रित है जो व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को साकारित करने में सक्षम बनाए।

ग) यह सभी तक समान अवसरों की पहुँच सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करती है।

प्रगति को परिभाषित करते हुए उत्तर शुरू करें।

सामाजिक प्रगति के आयाम

- मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं तक पहुँच
  - भोजन व पोषण
  - आवास
  - जल व स्वच्छता
  - शिक्षा व स्वास्थ्य देखभाल
- मानव कल्याण का आधार
  - निर्वाह के स्रोत
  - उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर
  - बेहतर स्वास्थ्य प्रणाली
  - सामाजिक सुरक्षा
- अवसर
  - अवसरों की समानता
  - अवसरों की उपलब्धता
  - क्षमता-निर्माण
- स्वच्छ व धारणीय पर्यावरण
  - जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विभिन्न आयाम

- सामाजिक प्रगति का संबंध जीवन में संतुष्टि की प्राप्ति से है। इसका आशय मनुष्य की बिना बाह्य कारणों से प्रभावित हुए अपनी क्षमताओं को विकसित करने में सक्षमता से है। गरीबी की सभी प्रकार से सभी रूपों में समाप्ति सामाजिक प्रगति का अंतर्निहित तत्व है।

- आर्थिक विकास के विपरीत सामाजिक प्रगति एक समावेशी अवधारणा है जो शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, आवास, अवसरों की समता को शामिल करती है।

- यह सम्पूर्ण विकास के केन्द्र में मानवीय कल्याण व पर्यावरणीय सततता को बराबर महत्व देती है।

- यह हमारी भावी पीढ़ियों को एक बेहतर व धारणीय विरासत सौंपने पर केंद्रित है।

अगली बार्ट इसमें प्रति पारित ठीक है... आयामों की चर्चा कीजिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निष्कर्षतः, समावेशी विकास हेतु 'आर्थिक विकास' के साथ-साथ सामाजिक प्रगति भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

4

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	1/4	1/2	1/2	1/4	—	1/4	—
Grade	B	C	C	C	—	B	—

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

प्रश्न पत्र- द्वितीय

[मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, बहुसंस्कृतिवाद; अपराध एवं दंडः भ्रष्टाचार, व्यापक हिंसा, जाति संहार, प्राणदंड; विकास एवं सामाजिक उन्नति; लिंग भेदः स्त्रीभ्रूण हत्या, भूमि एवं संपत्ति अधिकार, सशक्तीकरण, जाति भेदः गांधी एवं अम्बेडकर]

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों में मुद्रित हैं।

उम्मीदवार को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी प्राधिकृत माध्यम में लिखे जाने चाहिये जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। प्राधिकृत माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI** and **English** Language.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation